

EXTRAORDINARY

भाग II—जण्ड 3—उपलब्ड (ii) PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY

सं∘ 232]

नई बिल्ली, बृहस्पतिवार, मई 23, 1974/ज्येष्ठ 2, 1896

No. 232]

NEW DELHI, THURSDAY, MAY 23, 1974/JYAISTHA 2, 1896

इस भाग में भिग्न पृद्ध संस्था दी जाती ई-जिससे कि यह झलग संकलम के क्य में रखा जा सके। Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF LABOUR

ORDER

New Delhi, the 23rd May 1974

S.O. 316(E).—Whereas in the opinion of the Central Government, it is necessary and expedient so to do for maintaining supplies and services essential to the life of the community;

And whereas any strike in any of the Railway Services in India would prejudicially affect the maintenance of supplies and services essential to the life of the community, it is necessary and expedient to prevent strikes in the said Railway Services;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by rule 118 of the Defence of India Rules, 1971, the Central Government hereby prohibits, any strike in connection with any industrial dispute in the Railway Services in India for a period of six months with effect from the 26th May, 1974.

[No. F. S.42025/12/74-LRI]

N. P. DUBE, Addl. Secy.

श्रम मन्त्रालय

श्रादेश

नई दिल्ली, 23 मई, 1974

का० ग्रा० 316(श).--याः केन्द्रीय सरकार की राय में समुदाय के जीवन के िए ब्राहण्यक प्रदाय और नेपाय नाये रखने के लिये ऐसा करना ब्रावण्यक ब्रीर नमीबीन

श्रीर यत: भारत में किसी भी रेलवे सेवा में कोई हड़ताल समुदाय के लिए ग्रावश्यक प्रदाय भ्रीर सेवाओं को बताये रखते के लिए प्रतिकृत प्रभाव डालेगी, इसलिये उक्त रेल सेवाओं में हड़तालों को रोक्ता श्रावश्यक भ्रीर समीवीत है;

भतः, भव, भारत रक्षा नियम, 1971 के नियम 118 द्वारा प्रवक्त शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्बारा रेलवे सेवायों में किसी भी श्रीद्योगिक विवाद से सम्बन्धित हुड़ताल को छ: भाह के लिए 26 मई, 1974 से प्रतिथिद्य करती है।

[सं॰ फा॰ एस-42025/12/74-एल॰ आर॰-1] नि॰ प॰ दुवे, अपर सचिव।